श्रीमद भागवत कथा का द्वितीय दिवस

13 मई , उज्जैन । प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन में आज दिनांक 13 मई को जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के श्रीमुख से श्रीमद भागवत कथा के द्वितीय दिवस व्यासपीठ से पूज्य आचार्यश्री ने कहा शब्द की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि शब्द ब्रह्म है, शब्द वेधक एवं बोधक होता है, वे प्रेरक भी होते है वे न केवल भविष्य के प्रति उत्सुकता, आशावादिता पैदा करते है अपितु वे बड़ी सामर्थ्य होती है एश्वर्य, विभूति एवं दिव्यता का सृजन करते है । राजा परीक्षित एवं शुकदेव का प्रसंग का विस्तार से वर्णन किया। कलि प्रभाव के परीक्षित में संचय की भावना आ गई, जिन पदार्थो में सुख का संकेत है, इनकी प्रचुरता हमें सम्मान देगी, हमारा प्रभुत्व होगा, हम चर्चित होंगे शीर्षस्थ होने की भावना स्वभाविक है , इस कारण परीक्षित में लोभ जगा जिसके करना ही वह अभिशप्त हो गया।

सन्यास का अर्थ है ऐश्णाओं से मुक्ति । कामनाओं से मुक्त हो जाना ही सन्यास है, ऐश्णाओं के कारण ही मूल्यों को, सिद्धांतो को चुनौती दी जाती है आप वर्जनाओं को लांघ नहीं सकते जब एक राजा के द्वारा मूल्यों को, परम्पराओं को तोड़ते हुए देखा तब शृंगी ऋषि अपने आप को रोक ना पाए, ये सीमाएं रहने देना चाहिए जो मर्यादाएं शिष्यों के लिए है वही गुरुओं के लिए भी है।

सब कुछ जल से है, जल न हो तो प्राण की कल्पना नहीं की जा सकती है । सन्यासी जीवन जप, तप, विचार स्वयं के लिये नहीं है सन्यासी एवं राजा को अधिकार मधुमक्खी द्वारा जिस प्रकार पराग को चुना जाता है उतना ही लेना का अधिकार है । कामनाओं एवं वासनाओं के सैन्यबल से आपको बचना होगा । भगवान कहते है जो मुझे जिस रूप में भजता है मैं उसी रूप में हो जाता हूँ। जा की रही भावना जैसी।

मन वचन कर्म की एकता महात्मा बनाती है “श्रद्धावान लभते ज्ञानं” जिस दिन भी आपको संशय दिखने लगे, आपकी अवनति के मूल में आपका अविवेक है, अज्ञानता है । संशय आपका सबसे बड़ा शत्रु है । जो हमारे संशय की निवृत्ति कर दे वही गुरु है। जिसके पास हमारे सभी प्रश्नों के पहेलियों के उत्तर है वह गुरु है। स्वयं के प्रति प्रतिबद्धता होना चाहिए । श्रद्धा आप के चक्षु को खोल देती है । स्वरुप की विस्मृति, आत्म विस्मृति दुःख का मूल कारण है।

भागवत योग का समर्थन करती है ध्यान योग, मनो योग, प्रेम योग, लय योग, सांख्य योग, भक्ति योग, भजन, यजन। साधक कुछ भी करे परन्तु उसे सत्य का बोध होना चाहिए । निसंदेह राजा परीक्षित को शुकदेव ने योग सिखाया होगा तभी उसकी मुक्ति हुई होगी । गीता का पहला योग विषाद अवसाद योग है। हम भारतीयों ने तो अवसाद में से भी योग का निर्माण किया है । व्यक्ति अकेला नहीं है धरती, अम्बर, वायु, वनस्पति, जीव, जंतु, इस जगत में रहने वाले असंख्य लोग आपके सदैव साथ में है। मानव

मन से बना है । मानव पूर्ण तभी होता है जब वह कथा अमृत पीता है । अधूरेपन को मिटाना है तो श्रवण मनन करना होगा। मनो और सतरूपा से पहली संतान कन्या आई है । माँ सर्वप्रथम है, हम माता की भाषा ही कहते है । इस भूमि पर नर-नारी समान है । इस धरती पर अनसुइया पैदा हुई जिसने देवताओं को बालक रूप में खिलाया है।

आप महाकाल वन में बैठे हो यहाँ का शासक ही मृत्यु का देवता है, काल व्याल मुखग्रास संसार निर्नास हेतवे। कर्क रेखा के केंद्र बिंदु नाभिकीय सत्ता में महाकाल बैठे है गुरु हमें संसारिकता के गोले से मुक्ति के द्वार तक लाता है हमारी उलझने हमें ही पता है इससे हमें गुरु के मार्गदर्शन में हमें ही निकलना होगा। सच्चे गुरु एक जगह नहीं अटकाते है। हमारी संस्कृति में स्वीकार्यता है हमारा औदार्य है कि हमारे यहाँ द्वेत है, शुद्धाद्वैत है, विशिष्टाद्वैत है और यहाँ त्रेत भी है।

यज्ञ नारायण है यज्ञ मतलब विष्णु । यज्ञ से ही पर्जन्य आयेंगे, धरा पर संतुलन होगा, देवतओं से सम्बन्ध स्थापित होगा। साधना में निराभिमानिता होना चाहिए । आहार, विचार की शुद्धता, चिंतन की पारदर्शिता भगवद प्राप्ति के उपाय है । साधन में आहार शुद्धि की बात कही है । भागवत कथा आत्म कल्याण करती है।

योगऋषि स्वामी रामदेव जी ने संबोधित करते हुए कहा हमें वेदों के मार्ग पर तथा सद्गुरु द्वारा दिखाए मार्ग पर ही आगे बढ़ना है । सबी प्राणियों में एक ही सच्चिदानंद भगवान का दर्शन है । जीवन में कोई समर्थ गुरु मिल जाए तो ही जीवन पूर्ण होता है । सन्यासी की आवश्यकता केवल प्रभु का प्यार ही है । ज्ञान से ही जीवन है मति से ही संपत्ति है । ज्ञान का मूल स्त्रोत भगवान है । सारी प्रेरणाओं का, सभी संबंधो का, जीव, जगत, प्रकृति का मूल स्त्रोत भी भगवान ही है । कर्तव्य के अहंकार से मुक्त होना ही ज्ञान योग है। हमारा अभ्यास ही हमारा जीवन है, हमारी सोच ही हमारा निर्माण करती है । आचरण अभ्यास ही जीवन का परम सत्य है।

स्वामी रामदेव जी ने “कौन कहे तेरी महिमा कौन कहे तेरी माया”, “कण कण में जो रमा है हर दिल में जो समाया उसकी उपासना ही कर्त्तव्य बताया”, “भगवान आर्यों को ऐसी लगन लगा दे, देश और धर्म की खातिर मिटना इन्हें सीखा दे” संकीर्तन भी गाये और साथ ही प्राणायाम और आसनों की संक्षिप्त जानकारी भी प्रदान की।

कथा में दीप प्रज्ज्वलन स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, पद्म विभूषण श्री विन्ध्येश्वर पाठक जी, श्री प्रहलाद मोदी जी, बाबुलाल जी गौर गृहमंत्री मध्य प्रदेश, श्री विनीत नारायण जी ब्रज फाउंडेशन द्वारा किया गया। कथा में प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी, स्वामी नचिकेता गिरि जी, कैलाश विजयवर्गीय जी महासचिव भाजपा , शिविर प्रमुख विनोद जी अग्रवाल

उपस्थिति रही। 18 मई तक चलने वाली कथा नियमित दोपहर 4:30 बजे से सायं 7 बजे तक होगी जिसका सीधा प्रसारण संस्कार चेनल पर भी देखा जा सकता है।

योग शिविर का आयोजन

जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में दिनांक 1 4 मई को योगऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा योग शिविर का आयोजन किया गया है। जो प्रातः 6 बजे से 8 बजे तक होगा जिसमे स्वामी रामदेव जी शिविरार्थियों को योग कला का प्रशिक्षण देंगे।

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन